International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3)
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com

डा. देवेश कुमार मिश्र
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी

सम्पादक की लेखनी से.....

आधुनिक वैज्ञानिक उत्कर्ष के इस युग में मनुष्य की सुविधा के लिए उपकरणों की अधिकता प्राप्त है । समाज इनके प्रति घोर आस्तिक हो चला है । प्रश्न यह है कि क्या ये सुविधाएँ मनुष्य को सुखी बना रही है ? सफलता दे रही हैं ? अथवा एक व्यक्ति के रूप में सामाजिक संवेदना का सम्वाहक बना रहीं है । अनुभूत है कि प्रत्येक सामाजिक की वैचारिकी कुण्ठित व तनावग्रस्त है अतः उपकरणों / संसाधनों से यदि उसे सुख / शान्ति मिल सकते हैं तो वह इतने सुविधा सम्पन्न समाज का नागरिक होते हुए भी सांवेदनिक क्यों नही है ? उसकी उदारता / सेवा भाव / निष्ठा / श्रद्धा / व देश और समाज के प्रति कर्तव्यबोध / ये सब क्यों क्षीण हो गये ? आइये उत्तर हेतु विचार करें ... . जब शास्त्र और काव्य साहित्य और परम्परा के अध्ययन – अध्यापन पर अधिकांश भारतीयों का विश्वास था, तब व्यक्तित्व में इतनी गिरावट नहीं थी । आज पारम्परिक अध्ययन व भारतीय संस्कृति से अविश्वस्थ किन्तु अधिसंख्य विषयों और आधुनिक पल्लवग्राही जानकारियों से सुसज्जित ..... पद / प्रतिष्ठा / धन प्राप्त नागरिक न कुल के लिए उत्तरदायी दिख रहा है और न ही देश व समाज के लिए । इसका एक मात्र कारण है ..... संस्कृत भाषा के पठन पाठन पर विश्वास न होना और अन्य भाषा / संस्कृति का अन्धानुकरण । शास्त्र में विश्वास करने वाले भारतीय को अन्धविश्वासी करार करना । पुस्तकें याद करने वालों को विद्वान की संज्ञा प्रदान करना । अभद्र अभिनय / असार गीत / अपसंस्कृति के पोषक साहित्य का पुरजोर समर्थन करना । जितने गहरे साहित्य के अध्ययन का वातावरण था, उतना ही गहरा व्यक्तित्व भी पाया जाता था । यही कारण था कि तत्कालीन रचनाएँ भी कालजयी होती थी, और उनके वर्णन / सन्देश भी सार्वभौमिक होकर अनुकरणीय होते थे । करूणा थी, तब करूण की स्थापना हुई । जब धर्मपालन में दृढता थी तब महाभारत का अंगी रस शान्त रस बना । आचार/ व्यवहार की सम्पन्नता थी कर्तव्य व / उत्तरदायित्व का बोध जीवन्त था तब वर्ण था । समाज के पोषण की आवश्यक दिशाओं का बोध था तब जातियों ने भी जातीयता स्वीकार की । क्या कारण है कि आज अनेक आधुनिक वैषयिक ज्ञान/ उपकरणात्मक सुविधा सम्पन्न समाज में / प्रगतिशील कहलाने वाले समाज में विश्वास का संकट / आचार का संकट / संस्कृति की सुरक्षा का संकट । व्यक्तित्व का संकट और तमाम जटिलताएँ खडी है वैश्वीकरण ने अपनी माया अलग पसार रखी है, उत्तरआधुनिकतावाद ने समाज को आधुनिक होने से पूर्व ही अपना ग्रास बना लिया । जिसने अपने जीवन में कोई कीर्ति व यश का कार्य नहीं किया उसके सन्देश अनुकरणीय व मान्य होते चले जा रहे हैं । उनके विचारों / सिद्धान्तों का जैसे बाजारीकरण हो चला है । तार्किक परीक्षण के बिना माता / पिता / गुरू / भाई – बन्धु आदि के सम्मान भी संकटपूर्ण पूर्ण हो गये हैं । ओछी कल्पना, बचकानी भाषा प्रयोग से गुम्फित रचनाएँ / लोलुपता व जुगाड से प्राप्त पद प्रतिष्ठाएँ / नौकरी से धनार्जन के लिए बना हुआ शिक्षक समाज के आदर्श बन गये । अद्यतन अपने को अप्रतिष्ठित मानने वाले की कृति / कार्य / श्रम / उदारता / निष्ठा / त्याग ही समाज व राष्ट्र को कुछ देने का कार्य कर रहे हैं । किन्तु ऐसे इतने नहीं है कि उन्हें सूचीबद्ध किया जाय । संस्कृत के पास प्राच्य से अधुनातम की सामग्री विद्यमान है । वैदिक परम्परा के ग्रन्थ हों अथवा लौकिक संस्कृत परम्परा के सभी में व्यक्ति और व्यक्तित्व के निर्माण की मौलिक क्षमता है । आवश्यकता है समझने व अनुकरण / पालन की । अत्युक्ति न होगी ..... 'संस्कृतिः संस्कृताश्रिता' । चतुर्थकक्षानिवेशी विद्वत समाज / हाशिये पर खडी चिन्तन शक्ति कभी समाज को अक्षुण्ण सन्देश नहीं दे सकते । संस्कृत भाषा गाय प्रकृति की है जिसे कितना भी नीम का पत्ता खिलाया जाय, दूध मधुर ही होगा । प्रस्तुत अंक में संस्कृत के विभिन्न पक्षों से मोती की भॉति चुने हुए लेखों का प्रकाशन किया गया है । सुधीजनों को अवश्य लाभ मिलेगा ... ।

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी